भक्ति संहिता

BHAKTI SAMHITA · SACRED SCRIPTURES

माता लक्ष्मी

लक्ष्मी चालीसा

LAXMI CHALISA

॥ श्री माता लक्ष्मी की कृपा से ॥

भक्ति संहिता

लक्ष्मी चालीसा

LAXMI CHALISA

॥ दोहा ॥

मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में वास।
मनोकामना सिद्ध करि, परवहु मेरी आस॥

सिंधु सुता विष्णुप्रिये, नत शिर बारम्बार।
ऋद्धि सिद्धि मंगलप्रदे, नत शिर बारम्बार॥ (टेक)

॥ चालीसा ॥

01 सिंधु सुता मैं सुमिरौं तोही।
ज्ञान बुद्धि विद्या दो मोही॥

02 तुम समान नहिं कोई उपकारी।
सब विधि पूरवहु आस हमारी॥

03 जय जय जगत जननी जगदम्बा।
सबके तुमही हो अवलम्बा॥

04 तुम ही हो घट घट के वासी।
विनती यही हमारी खासी॥

05 जग जननी जय सिंधु कुमारी।
दीनन की तुम हो हितकारी॥

जय जय माँ लक्ष्मी

06 विनवऊं नित्य तुम्हीं महारानी।
कृपा करो जग जननी भवानी॥

07 केहि विधि स्तुति करऊं तिहारी।
सुधि लीजिये अपराध विसारी॥

08 कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी।
जगत जननी विनती सुन मोरी॥

09 ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता।
संकट हरो हमारी माता॥

10 क्षीर सिंधु जब विष्णु मथायो।
चौदह रत्न सिंधु में पायो॥

श्री कमला

11 चौदह रत्न में तुम सुखदाई।
सेवत रहत देव समुदाई॥

12 जन्म लियो तुम सिंधु मझारी।
कहत तुम्हें त्रिभुवन हितकारी॥

13 जैसे विष्णु लिए अवतारा।
तुम हू संग जगत उजियारा॥

14 सीता राम के संग तुम रहीं।
लखन संग मिलि पाती गही॥

15 जब ब्रज में अवतरे कन्हाई।
तुम रुक्मिणी रूप में आई॥

जय माँ लक्ष्मी

16 जो कोई पूजे तुम्हें लगाई।
पावत सुख सम्पत्ति मनचाही॥

17 घर में धन-धान्य हो बढ़ाई।
सब विधि तुम सुख देहु सदाई॥

18 तुम हो कमला कमल विहारी।
करहु सदा मम घर उजियारी॥

19 जन्म जन्म करि तुमरी सेवा।
पाऊं सदा तुम्हारे मेवा॥

20 यदि कोई तुम्हें न पूजे नाहीं।
घर से लक्ष्मी जाय समाहीं॥

श्रीं ह्रीं श्रीं

21 जो पूजे नहिं वे नर पापी।
जाय नरक में दुःखी परतापी॥

22 लक्ष्मी जी की पूजा जो करता।
सो जन दुःख से कभी न डरता॥

23 भाग्यहीन जन जो तुम ध्यावे।
नित प्रति सुख-सम्पत्ति पावे॥

24 जो मनुष्य पूजे तुम्हारो।
हरहु सकल संकट दुख सारो॥

25 दुर्जन भी जो तुम्हें मनावे।
अंत समय सुख सम्पत्ति पावे॥

जय माँ

26 जो कोई लक्ष्मी चालीसा गावे।
सो नर मनोरथ सब पावे॥

27 शुक्रवार को जो व्रत करता।
सो नर कभी न दुख भरता॥

28 सुख सौभाग्य दो माता मेरी।
सुनहु विनती हमारी यह तेरी॥

29 जो तुमको मन से ध्यावे।
सो जन भव सागर तर जावे॥

30 रात दिन जो तुम्हें पुकारे।
सो जन दुःख से नहिं हारे॥

श्री लक्ष्मी नमः

31 ऋद्धि सिद्धि दो हे माता।
सुख सम्पत्ति की तुम दाता॥

32 पुत्र कलत्र सुख दो मोही।
इच्छित फल पूरन करो तोही॥

33 जो मांगत हो सो तुम दो माई।
चरण सेवा से सुख पाई॥

34 माया रूप तुम जग की माई।
सब सुख देती हो सुखदाई॥

35 मंगल मूल तुम महालक्ष्मी।
जय जय जय हो माँ लक्ष्मी॥

जय महालक्ष्मी

36 संतान सुख करहु दयाल।
तुम्हीं रखहु मोहि खुशहाल॥

37 जो नर तुम्हें पूजन आवे।
सब मनवांछित फल पावे॥

38 तन मन धन सब तुमको अर्पण।
चरण कमल में करत निवेदन॥

39 यह चालीसा पाठ जो करता।
सो नर दुःख से कभी न डरता॥

40 भक्त जनन के संकट हरता।
माँ लक्ष्मी की कृपा विस्तरता॥

॥ दोहा ॥

त्राहि त्राहि दुःख हरिणी, हरो बेगि सब त्रास।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करो शत्रुन का नाश॥

रामदास धरि ध्यान नित, विनय करत कर जोर।
मातु लक्ष्मी दास पर, करहु दया की कोर॥

॥ इति श्री लक्ष्मी चालीसा समाप्त ॥ जय माँ लक्ष्मी ॥

🙏 **नोट:** माँ लक्ष्मी की नियमित पूजा और इस चालीसा के पाठ से घर में सुख-समृद्धि आती है। शुक्रवार को माँ लक्ष्मी का विशेष पूजन करने से धन-धान्य की प्राप्ति होती है। श्रद्धा और भक्ति से किया गया पाठ माँ की कृपा दिलाता है।